प्रेस नोट

दिनांक: 10.04.2019

कक्षाओं में आनंदमय अधिगम का समावेश

भारतीय कला रूपों की विशाल विविधता की सराहना करना सिखाने और सक्रिय एवं अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहन देने के लिए, नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत से, सीबीएसई द्वारा कला को कक्षा I से XII तक के सभी शैक्षणिक विषयों की शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के साथ एकीकृत करने का निर्णय लिया गया है तथा इसके बारे में सभी विद्यालयों को 8 मार्च 2019 के परिपत्र संख्या Acad-12/ 2019 द्वारा सूचित किया गया है।

इस कदम की आवश्यकता और परिणाम का विस्तृत विवरण निम्नलिखित गद्यांशों में दिया गया है।

इसका संज्ञान इस विषय पर एनसीईआरटी के पज़िशन पेपर (कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच पर राष्ट्रीय फोकस समूह) से लिया गया है, जिसमें उल्लेख है कि **वर्तमान स्थिति में पाठ्यचर्या को व्यवस्थित करने के लिए हमारा दृष्टिकोण** आमतौर पर आंकलन के लिए परीक्षाओं से जुड़ी पद्धतियों सहित ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों में 'पैकेज्ड' के रूप में प्रस्तुत करना है जहां ज्ञान प्राप्ति और अंक, विषय क्षेत्र में योग्यता को पहचानने का एक तरीका होता है।

विषयों के कठोर वर्गीकरण से परस्पर-सम्बद्ध और एकीकृत ज्ञान के बजाय खंडित ज्ञान मिलता है है। नतीजतन, ज्ञान स्कूल और बाहर की सीमाओं में विभाजित हो जाता है। वर्तमान प्रणाली में, जो पहले से ही ज्ञात है, उसी पर बल दिया जाता है, जो बच्चों में ज्ञान के सृजन और जानने के नए तरीकों के अन्वेषण की क्षमता को कम करता है। इसमें ज्ञान की बजाय सूचना की प्रधानता हो जाती है जो समझने और समस्या सुलझाने में सहायता करने की बजाय, भारी पाठ्यपुस्तकों, क्विज़िंग और ज्ञान की यांत्रिक पुनर्प्राप्ति विधियों की और ले जाती है।

कला एकीकृत शिक्षण अधिगम आनंदमय और नवाचारयुक्त बनाने का सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत तरीका है। सौंदर्य बोध और अनुभव बढ़ते हुए बच्चे की रचनात्मकता के प्रमुख बिंदु हैं। **कला अधिकृत अधिगम** कक्षा के ज्ञान विनिमय को आनंदमय और रचनात्मक बनाता है और हमारी समृद्ध कला और सांस्कृतिक विरासत की सराहना करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। तथापि यह समझना चाहिए कि यद्यपि कला शिक्षा और कला एकीकृत शिक्षा को पारस्परिक रूप से अनन्य माना जा सकता है, किंतु कला एकीकृत अधिगम को अपनाने हेतु कला शिक्षा पूर्व आवश्यक है।

बोर्ड द्वारा कई हितधारकों के साथ विचार-विमर्श किया गया, जिनमें विद्यालय, प्रधानाचार्य, शिक्षक, एनसीईआरटी तथा कला पेशेवर शामिल हैं और तदनुसार यह सामने आया कि शिक्षा के साथ कला के एकीकरण से क्लास रूम अधिगम बेहतर होगा।

कला एकीकृत अधिगम का अर्थ: यह कला (दृश्य/ प्रदर्शन कला वगैरह) की सहायता से किसी विषय को पढ़ाने या सीखने तथा अध्यापन का पार-पाठ्यचर्या (क्रॉस-करिकुलर) दृष्टिकोण है। अत: कला, अपने सभी रूपों में, विषय-वस्तु के अधिगम का प्राथमिक मार्ग बन जाती है और आंकलन का एक तरीका भी। एकीकरण न केवल अधिगम प्रक्रिया को आनंदमय बनाने के लिए है, बल्कि यह इस हेतु उपयोग की जा रही कला की और सराहना व समझ विकसित करने के लिए भी है।

कला एकीकरण कला शिक्षा के स्थान पर नहीं है। एकीकरण विद्यार्थियों को सीधे आर्ट्स पढ़ाए जाने के पश्चात ही होता है। इसके आधारभूत ज्ञान के बिना, न तो विद्यार्थी और न ही विषय शिक्षक शिक्षा में कला को एकीकृत कर पाएंगे। उदाहरण के लिए, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में नोट्स गणित में भिन्न ((Fractions) के शिक्षण के साथ संरेखित किए जा सकते हैं। तथापि, संगीत के नोट्स के ज्ञान के बिना, छात्रों के लिए दोनों के बीच की कड़ी को समझना असंभव होगा।

शिक्षा में कला एकीकरण की आवश्यकता

कला एकीकरण आवश्यक है क्योंकि:

सबसे पहले, जब कला शिक्षा के साथ एकीकृत होती है, तो यह बच्चे को अवधारणाओं / विषयों की एक गहरी समझ के लिए कला-आधारित जांच-पड़ताल, अनुसंधान, अन्वेषण, आलोचनात्मक चिंतन और सृजनात्मकता का उपयोग करने में मदद करती है। सभी स्तरों पर विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन किए जा रहे सभी विषयों में रचनात्मक चिंतन और समस्या निवारण की क्षमता की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, रसायन विज्ञान में धातु विज्ञान का अध्ययन करने वाली नियमित पद्धति, या जीव विज्ञान में समसूत्रण (mitosis) और अर्धसूत्रण (meiosis) जब कला के माध्यम से एकीकृत या सिखाया जाता है, तो यह विद्यार्थी को ऐसे प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करेगा जैसे- यदि मैं एक धातु होता, तो मैं अन्य धातुओं से संयोजन की मेरी यात्रा को कलात्मक रूप से कैसे चित्रित करता? या मैं समसूत्रण (mitosis) और अर्धसूत्रण (meiosis) के चित्रण के लिए नुक्कड़ नाटक का उपयोग कैसे कर सकता हूँ?

दूसरा, कला एकीकृत अधिगम भी अनुभवजन्य अधिगम को बढ़ाता है, क्योंकि यह विद्यार्थी को अधिगम अनुभव से सीधे अर्थ निकालने और समझ विकसित करने में सक्षम बनाता है।

तीसरा, इस तरह का एकीकरण शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को न केवल आनंदमय बनाता है, बल्कि यह कुछ जीवन कौशलों के विकास पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है, जैसे कि, सम्प्रेषण कौशल, चिंतन और अन्वेषण, उच्च आत्मविश्वास स्तर और आत्मसम्मान, सौंदर्यशास्त्र की सराहना और रचनात्मकता।

चौथा, यह एकीकरण विद्यार्थी के मन-मस्तिष्क को व्यापक बनाता है और उसे विषयों/प्रकरणों/वास्तविक जीवन के बीच बहु-विषयक संबंध समझने में सक्षम बनाता है।

अत:, निम्न को सिखाना संभव है:

क) प्रत्येक बच्चे द्वारा एक ग्रह/वन/महासागर चुनते हुए इस पर एक यात्रा विवरणिका बनाकर कला के माध्यम से ब्रह्मांड में ग्रह या जंगल, महासागर को

ख) प्रत्येक बच्चे द्वारा अपनी रूचि का तत्व / यौगिक बनना और तब कक्षा में अन्य यौगिकों के साथ मिलने या नहीं मिलने (आकर्षण या प्रतिकर्षण) के लिए प्रयत्न करके रसायन विज्ञान में प्रतिक्रियाएं और यौगिकों को। इस अभ्यास में ढेर सारा हास्य हो सकता है।

ग) एक कठिन कविता के अर्थ और पंक्तियों को सीखने के लिए इसकी प्रत्येक पंक्ति को तोड़कर अमिताभ बच्चन या जेम्स बॉन्ड द्वारा बोले गए संवाद में ढालना या बॉलीवुड के गानों पर आधारित संगीत पर साधना।

इस पृष्ठभूमि में, सीबीएसई ने अपने सभी संबद्ध स्कूलों को 2019-20 के शैक्षणिक सत्र से निम्नलिखित का अनुपालन करने का निदेश दिया है:

1. **कला शिक्षा कक्षा 1 से 12 तक के लिए अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाएगी तथा इसके लिए प्रत्येक विद्यालय में सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। प्रत्येक विद्यालय कला शिक्षा के लिए अनिवार्य रूप से प्रति सप्ताह, प्रति कक्षा न्यूनतम दो पीरियड आरक्षित करेगा।** कला के अंतर्गत आने वाली सभी चार मुख्य धाराएं जैसे संगीत, नृत्य, दृश्य कला और रंगमंच को शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षण के बजाय अधिगम पर बल दिया जाना चाहिए, और दृष्टिकोण अनुदेशनात्मक के बजाय भागीदारीपूर्ण, संवादात्मक और अनुभवजन्य होना चाहिए।
2. **एक कदम आगे बढ़ते हुए, बोर्ड ने सिफारिश की है कि** संगीत, नृत्य, दृश्य कला (शिल्प सहित) और थिएटर जैसे चार प्रमुख क्षेत्रों के अतिरिक्त **उच्च प्राइमरी वर्गों के विद्यार्थी, जो कि कक्षा 6 से 8 तक हैं, को भी** उनके विषयों में बहु-विषयक संबंध स्थापित करके **पाक कला से परिचित कराया जाए,** ताकि वे पौष्टिक भोजन का मूल्य सीखें, भारत में उगाई जाने वाली फसलों और मसालों के बारे में जानें, विभिन्न बीजों से तेल कैसे निकाला जाता है, अच्छी कृषि पद्धतियों के बारे में, कीटनाशक के उपयोग के बारे में जानें। विभिन्न राज्यों के पारंपरिक खाद्य पदार्थों को इस विचार के साथ सूचीबद्ध करने का प्रयास किया गया है, कि विद्यार्थियों को भी हमारी संस्कृति के इस पहलू से अवगत कराया जाए। जहां तक संभव हो, विद्यालय कुछ पाक कला कक्षाएं (जहां लड़कियां और लड़के समान के

रूप में भाग लेते हैं) 6, 7 या 8 में से किसी कक्षा में भी कला शिक्षा के एक हिस्से के रूप में पेश कर सकते हैं। **स्कूल दो पूर्व शर्तों सहित अपनी प्रक्रियाएं बनाने के लिए स्वतंत्र हैं - एक, यह कि सभी सुरक्षा पहलुओं का अच्छी तरह से ध्यान रखा जाएगा, और दो, यह एक आनंददायक अधिगम क्रिया-कलाप होना चाहिए।**

3. "सभी स्कूलों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे कला को शिक्षाशास्त्र में एकीकृत करने के लिए ठोस प्रयास करें और इसे सभी ग्रेडों अर्थात 1 से 12 तक आनंदमय शिक्षा प्रदान करने के लिए एक माध्यम के रूप में उपयोग करें।
4. अध्यापन विधि, पद्धति, प्रक्रियाएं, आदि विभिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, जैसा कि विभिन्न स्कूलों द्वारा तय किया जाए। तथापि, स्कूलों द्वारा सुनियोजित सहभागिता की जानी चाहिए। गैर-परीक्षा-आधारित और प्रक्रिया-उन्मुख मूल्यांकन किया जाएगा। पढाए जाने वाले सभी कला रूपों के लिए थ्योरी प्रैक्टिकल, प्रोजेक्ट वर्क बुनियादी घटक होंगे। विस्तृत गतिविधियां एक दस्तावेज़ में सुझाई गई हैं जो जल्द ही उपलब्ध कराया जाएगा।